
दान - धर्म



दान की परम्परा आदिकाल से चली आ रही है। हिन्दु धर्म में जो दान की महत्ता बताई गयी है, वह सर्वोत्तम है। दान का संबंध दया से है। सात्त्विक, राजसी और तामसी इन तीन प्रकार के दान का वर्णन श्रीमदभागवदगीता के सत्रहवें अध्याय में भगवान श्री कृष्ण ने किया है। भूमिदान, अन्नदान, विद्यादान, गौदान स्वर्णदान आदि अनेक प्रकार के दान हैं। दान हृदय को विराट, मन को विशाल एवं जीवन को निर्मल बनाता है। दान से आत्मा का अन्धकार नष्ट होता है।

वृच्छ कबहु नहीं फल भखै, नदी न संचै नीर
परमारथ के कारणै, साधुन धरा शरीर॥

वृक्ष कभी भी अपने फल को स्वयं नहीं खाता है, परथर मारने पर भी वह मारने वाले को मीठे मीठे फल देता है, नदी अपने जल को स्वयं नहीं पीती है इसी प्रकार साधु पुरुष, सज्जन पुरुष भी समाज एवं राष्ट्र को देने के लिए, सबके कल्याण के लिए जन्म लेते हैं।

जिस क्षण दान की प्रेरणा मन में जागृत हो तुरन्त दान करना चाहिए क्योंकि दूसरे ही पल मन बदल जाता है। दान इस प्रकार देना चाहिए कि एक हाथ दे वह दूसरे हाथ में न मालूम पड़े। अमृत में जितने गुण होते हैं, उतने ही बल्कि उससे भी बढ़कर गुण दान में हैं। दान, धर्म का प्रवेश द्वारा है। जिस घर में दान देने की परम्परा होती है वहाँ लक्ष्मी जी सदैव निवास करती है। दान बहुत ही श्रद्धा से करना चाहिए।

वर्तमान पीढ़ी के द्वारा किए सत्कर्म का फल भावी पीढ़ी को भी मिलता है। घर में लक्ष्मी बढ़ने पर दोनों हाथ खुले चाहिए, जिससे द्रव्य दान सरिता बहती रहे।

कुछ करके जाइए, दुनिया तुम्हें याद करेंगी।

दान - धर्म की विधियाँ

तुला दान-

तुला दान करने में अपने साथ पोते एवं पड़पोते को लेकर बैठते हैं। यदि हम चाहें तो दोहिते को भी साथ लेकर बैठ सकते हैं। इन तीनों के बजन

से ५ किलो सामान ज्यादा लेते हैं।

तैयारी:- १. पीतल का तराजू, २. शालीग्राम जी के वजन के बराबर तुलसी, ३. सोने का सिंहासन, ४. शालीग्राम जी के वस्त्र (पाँचों) ५. खाने पीने का सामान, सोना, काँसी, चाँदी, लोहा, ताँबा, पीतल, वस्त्र (स्त्री एवं पुरुष), कोयला, धी, तेल, चीनी, लकड़ी, सिरख, पथरना, रूई, माचिस। इसके अलावा गृहस्थी में व्यवहार किए जाने वाले सभी समान दिए जाते हैं। पण्डित के द्वारा एक माला का होम होता है। शालीग्राम जी की पजा कराके यह दान दिया जाता है। तेरह ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं। यह सारा सामान पण्डित एवं गुरु ले जाते हैं।

पद का दान

पद १३ ब्राह्मण को दिए जाते हैं।

सामग्री -

१. थाली, २. गिलास, ३. कटोरी, ४. छत्ता, ५. गोमुखी ६. माला, ७. आसन, ८. जनेऊ, ९. सोना (टिकड़ी या अंगुठी), १०. चाँदी (टिकड़ी या प्याला), ११. चीनी, १२. नगदी रुपया, १३. वस्त्र(गंजी, गमछा), १४. खड़ाऊ (चप्पल) आदि।

अष्टमा दान

यह दान वृद्ध या अति बीमार व्यक्ति के लिए किया जाता है। इसके प्रभाव की अवधि बारह वर्ष तक की है। दान करने के बारह वर्ष पूर्ण होने पर यह दान वापस करना पड़ता है।

सामग्री -

१. काला कपड़ा(१ मीटर), २. खड़ाऊ, ३. सोने की टिकड़ी, ४. चाँदी की टिकड़ी, ५. लोहे की कड़ाही, ६. रूई, ७. काला तिल, ८. काला उड़द, ९. गुड़, १०. नमक, ११. धी, १२. सरसों तेल आधा लीटर, १३. सप्तधान (चना दाल, चावल, गेहूं, उरद दाल, अरहर, मोठ दाल)

यह सारा सामान काले कपड़े में बाँध कर ब्राह्मण को या शनि मन्दिर में देते हैं। तेरह ब्राह्मण को भोजन कराकर टीका लगाकर दक्षिणा देवें। ब्राह्मण भोजन घर के बाहर भी करवा सकते हैं।

गौ दान

जीवन के प्रत्येक अवसर पर गौ दान करने का विधान है। स्वरूप गाय का दान

करना हर समय संभव नहीं होता। उसके निमित हम रूपया न्यौछावर कर देते हैं। स्वरूप गाय यदि हम दान देते हैं तो उसके साथ देने वाले समान इस प्रकार हैं।

सामग्री -

सोने का सींग, चाँदी का खुर, ताँबे की पीठ, मोती की पूँछ, पीतल की बाल्टी ढक्कन सहित, ओढ़ाने का वस्त्र, चारे का रूपया आदि।

धर्मराज की छाबड़ी-

धर्मराज की छाबड़ी संक्रान्ति मे देते हैं। चावल सवा सेर या पाँच सेर, सफेद धोती गंजी या पाँचों कपड़ा अपनी श्रद्धानुसार, चाँदी की धर्मराज की मूर्ति, व चाँदी की निसरनी देना चाहिए।

यमराज की छाबड़ी-

यमराज की छाबड़ी संक्रान्ति मे देते हैं। सवा सेर गेहूँ या पाँच सेर गेहूँ, काला ब्लाउज पीस या काला कपड़ा चाँदी की यमराज की मूर्ति, नाव, खेवटीया, चाँदी निसरनी (सीढ़ी), चाँद, सूरज यह समान दान मे दिए जाते हैं।

चित्रगुप्त का दान-

चित्रगुप्त के पाँचों कपड़े, कापी, पेन, चप्पल, सवा सेर मिठाई देते हैं। चित्रगुप्त जी हमारा लेखा-जोखा रखते हैं। मिठाई एक हण्डी में डालकर देते हैं। लाल कपड़े से हण्डी का मुँह बन्द कर देते हैं।

पोपा बाई का दान-

लुगाई का कपड़ा, सवा सेर मिठाई, पाव भर राई देने का महत्व है। राई उछालने से भूत प्रेत नहीं आता है। खोपरा या काँसी का एक कटोरा एक छाबड़ी में डालकर उसमें राई भरकर देते हैं। गेट के बाहर खड़े होकर यह दान दिया जाता है। लेखो राई-राई को, राज पोपा बाई को।

जम द्वारा-

एक थेला मे साँवा किलो मिठाई, टार्च, चप्पल व लाठी (गेड़ीया) एक साथ एक ब्राह्मण को देते हैं।

जाड़ा के दान-

पहले एक गरम कपड़ा किसी ब्राह्मण या गरीब को देकर फिर पहनना चाहिए।

बरसात के दान-

छाता एक अवश्य दान करना चाहिए ।

गर्भी के दान -

चटाई, चदर, तकिया, सुराही, पंखा, छाता, चप्पल, गिलास किसी ब्राह्मण को देना चाहिए ।

फलों के दान-

ऋतु के अनुसार आने वाले हर नये फल को पहले किसी ब्राह्मण को देकर ठाकुर बाड़ी में चढ़ाकर फिर खाना चाहिए ।

दैनिक जिन्दगी में नित्य करने वाले दान-

ठाकुर जी के भोग लगाना, अग्नि में आहृति देना, गरीब को भोजन कराना, ब्राह्मण को देना, कुत्ता को देना, गाय को गौ-ग्रास देना या पैसे अलग करना, कागला को देना, कबुतर को दाना देना, किडी नगरा सिंचना, नित्य अन्न दान करने के लिए एक मुट्ठी अनाज एक डिब्बे में डालते रहना चाहिए ।

दान देने की तिथियाँ-

कुछ तिथियाँ ऐसी हैं जिनमें दान देने से अनन्त लाभ होता है ।

इन तिथियों में इन युगों का आरम्भ हुआ था ।

सतयुग- कार्तिक शुक्ला नवमी

त्रेता युग - वैशाख शुक्ला तृतीया, आखातीज

द्वापर युग- माघ शुक्ला पूर्णिमा

कलयुग - भादौ कृष्ण त्रयोदशी इन तिथियों में इन युगों का आरम्भ हुआ था ।

यदि हम थोड़ा सा ध्यान देकर इस तिथि में दान करें तो पुण्य के भागी बनेंगे ।

चैत्र कृष्ण की पंचमी

चैत्र शुक्ल की पंचमी

वैशाख शुक्ल तृतीया

कार्तिक शुक्ला पंचमी

मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी

माघ शुक्ला त्रयोदशी

फाल्गुन कृष्ण तृतीया

ये कल्यादि तिथियाँ हैं और इन दिनों किया गया दान से अनन्त गुणा लाभ

मिलता है।

ग्रहण-

सर्य ग्रहण और चन्द्रग्रहण में दान देना। रविवार को सर्य ग्रहण और सोमवार को चन्द्रग्रहण पड़े तो उसे चूड़ामणि योग कहते हैं और वारो में ग्रहण दान करने का जो महत्व है। चूड़ामणि योग में उससे करोड़ गुना ज्यादा है।

दान -

ग्रहण वाले दिन दो कांसे की कटोरी (छिरपली) एक में धी और एक में तेल एवं सोने चाँदी की जगह नगदी रूपया डाल देते हैं। डाकोत को या शनि मन्दिर में दान अवश्य करते हैं। दरिद्र नारायण को पुराना कपड़ा, पैसा, खाने के सामान देते हैं।

नोट - गर्भवती महिला हो तो नारियल लेकर एक ही स्थान पर बैठती है। भगवान का नाम का ही जप करना चाहिए। नारियल गंगा में प्रवाहित कर देते हैं।

सोमवती अमावस्या-

सोमवती अमावस्या को दान दिया जाता है। सोमवती अमावस्या को पीपल के वृक्ष की १०८ परिकमा करके १०८ वस्तु का दान करते हैं। घर के बुजुर्ग यदि सोमवती अमावस्या का दान करते आ रहे हैं तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसका दान करते रहना चाहिए। इसका व्रत भी करते हैं। बारह वर्ष व्रत करके उजमन किया जाता है।

सुख सेज देना-

सतरंजी, विस्तर, रजाई, तकिया, खोली, चादर, सुराही, गिलास, पंखी, मोमबत्ती, माचिस या टार्च, अनाज, चप्पल, आभुषण मिठाई साथ में दक्षिणा देनी चाहिए।

नोट: बड़े व्रत के उद्यापन में सुख सेज दिया जाता है।

वस्त्र दान -

गर्मी में पित्तरों के निमित कपड़े अमावस्या के दिन देना चाहिए। सर्दी में रजाई, कम्बल, दुशाला, स्वेटर, मफलर दान देना चाहिए।

बुगचा- (सुहाग पेटी)

१३ या ३ बुगचा देते हैं। बुगचे में अपनी इच्छानुसार साड़ियाँ लहंगा, ब्लाऊज,

पुरुष के पाँचों कपड़े, अपनी इच्छानुसार गहना, चाँदी के बर्तन, चदर, सुजनी, श्रृंगार के सारे समान, चप्पल सारे समान को बक्सा या थैले में डालकर देते हैं।

सुहाग छावड़ी भी दान की जाती है। अपनी इच्छानुसार सुहाग का समान छावड़ी डालकर देते हैं।

अन्य वस्तु के दान-

ठाकुर जी की पोशाकें देना। ठाकुरजी के गहने देना। मन्दिरों में तुलसी देना, फूल की ऋतु में फूल बेलें, शंख, घन्टा देना, कुंकूं, अनन्तर, कपूर, धूप, चन्दन, रुई, माचिस, आसन माला, गोमुखी, दीपक की बाती बना कर धी में भीगाकर देना चाहिए।

गीता जी का दान-

तेरह गीता की किताब लाल वस्त्र में लपेट कर तेरह ब्राह्मण को देते हैं। ब्राह्मण को भोजन करा दक्षिणा भी देते हैं।

कुम्भ दान-

हर चौथे वर्ष पर कुम्भ का मेला आता है। यह मेला हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और इलाहाबाद में होता है। अर्द्ध कुम्भ छः साल पर, पूर्ण कुम्भ बारह वर्ष पर आता है।

ताँबे के लोटे में सोने चाँदी की टिकड़ी और चीनी डालकर लाल कपड़े से बाँधकर पण्डित या घाटिया को दान करते हैं।

भगवान की पतले

संक्रान्ति से प्रारम्भ करते हैं। यह सब पत्तल में ही देने का धर्म है।

- | | |
|-------------------------------|-----------------------------------|
| गणेश चौथ को गणेश जी की | - १४ जगह चूरमा के लड्डू व दक्षिणा |
| हनुमान जयन्ती को हनुमान जी की | - १४ जगह चूरमा के लड्डू व दक्षिणा |
| गुरु पूर्णिमा को गुरुदेव की | - १४ जगह चूरमा के लड्डू व दक्षिणा |
| गोविन्द जी की | - १४ जगह मिठाई व दक्षिणा |
| नर की | - १४ जगह मिठाई व दक्षिणा |
| नारायण की | - १४ जगह मिठाई व दक्षिणा |
| विष्णु भगवान की | - १४ जगह मिठाई व दक्षिणा |
| चित्रगुप्त की | - १४ जगह मिठाई व दक्षिणा |

गलघोटिया की
भाड़ भपाड़ की

यमराज की
धर्मराज की

पोपा बाई की

जय की (भगवान का पहरेदार)
विजय की (भगवान का पहरेदार)
शंकर भगवान की

अन्नपूर्णा की

रामनवमी को
सूरज भगवान की

चाँद की

श्रीकृष्ण भगवान की

तुलसी माता की

गाय माता की

नावटिये की

गंगा धाटिये की

गंगा माई की

- १४ जगह बूंदी के लड्डू व दक्षिणा
- कार्तिक उत्तरती चौदस (१४ जगह बूंदी के लड्डू व दक्षिणा
- १४ जगह गुड या चीनी व दक्षिणा
- १४ जगह कच्चा चावल, दही व दक्षिणा जेठ वैशाख में
- १४ जगह एक साढ़ी ब्लाउज ,पीतल की कटोरी में १४-१४ पेड़ा व दक्षिणा
- १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- शिवात्रि को १४ जगह फलाहार व दक्षिणा
- चैत्र नवरात्रि में १४ जगह सीरा, पूँडी व दक्षिणा
- चैत्र में १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- माघ सुदी सप्तमी को १४ जगह बिना नमक की पूँडी, खीर व दक्षिणा
- शरद पूर्णिमा को १४ जगह खीररखीरान्न, चना व दक्षिणा
- जन्माष्टमी में १४ जगह पंजीरी, फलाहार व दक्षिणा
- देव उठनी र्यारस को १४ जगह फलाहार व दक्षिणा
- गोपाष्टमी को १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- गंगा तीर पर १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- गंगा तीर पर १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- गंगा दशहरा को १४ जगह मिठाई व दक्षिणा

कुत्ता की
चील कागला की

कीड़ियों की

मंगता की
विश्राम घाट की

साक्षी गोपाल की

- १४ पत्तल गुलगला की कुतों को
- मंगसिर में १४ जगह पकौड़ी बनाकर छत पर
- कच्चा दलिया व चीनी साढे पांच किला इच्छानुसार कोई भी दिन
- १४ जगह गुड़ का भात व दक्षिणा
- तीर्थ स्थान पर १४ जगह मिठाई व दक्षिणा
- तीर्थ स्थान (पुरी या वृन्दावन में) १४ जगह मिठाई व दक्षिणा

जो कुछ भी हाथों से हो जाये उतना ही अच्छा है। अगर ज्यादा न कर सकें तो थोड़ा-थोड़ा ही कीजिए। पाव, आधा सेर, तीन पाव, सेर शक्तिनुसार।

बारह मासी स्नान-

बारह मासी स्नान गंगा के किनारे जाकर हर महीने या साल में छह बार नहा कर करते हैं। पण्डित के द्वारा संकल्प करवा कर गंगा में स्नान करना पड़ता है। उसके बाद एक माला का हवन होता है। पेरावणी के समान छाबड़ी, गहना, सुख-सेज, पण्डित जी को देते हैं। तेरह ब्राह्मण को भोजन करा दक्षिणा देते हैं।

पूजन सामग्री पण्डित के कहे अनुसार करते हैं।

धी दान-

जो व्यक्ति अश्विन मास में ब्राह्मणों को धृतदान करता है। उस पर देवों के वैद्य अश्विनी कुमार प्रसन्न होकर रूप प्रदान करते हैं।

तेल दान-

सिर पर लगाने के लिए तेल दान करने से मनुष्य तेजस्वी, शूरवीर, सौन्दर्यवान होता है।

चाय दान-

प्रतिदिन एक व्यक्ति को वैशाख, माघ, अधिक मास में चाय अवश्य पिलाना चाहिए।

दूध दान-

प्रतिदिन आधा सेर या एक पाव दूध शक्कर मिलाकर अवश्य दान करना

चाहिए।

अन्न दान-

वैसे तो हम लोग ब्राह्मण भोजन कराकर अन्न का दान देते हैं। किन्तु मनुष्य योनि हमें मिली है। न जाने किस रूप में परमात्मा हमारी सहायता करते हैं। अन्न दान महादान है। एक वर्ष में ३६५ दिन होते हैं। हमारे वर्ष भर के चक्र में ३६० वस्तु देने का महत्व है। ३६० दिनों की ३६० वस्तु देते हैं

कोथली

१/४ किलो या-५ किलो वजन की १३ तरह के धान की कोथली दी जाती है। कोथली में सामान डाल कर मुँह बाँधकर एक ही ब्राह्मण को देते हैं।

१. गेहूँ, २. चावल, ३. चीनी, ४. मुंगदाल, ५. अरहर दाल, ६. चना दाल, ७. बाजरी, ८. जँवार, ९. मकई, १०. चना काबुली, ११. पीला मटर, १२. पापड़-बड़ी, १३. मोठ आदि।

कर्म फल-

१३ तरह के १३ नग फल छोटे हो या बड़े साथ में सोने की टिकड़ी का दान करते हैं। सोने की टिकड़ी के स्थान पर दक्षिणा स्वरूप एक या दो रुपया भी देते हैं। इसकी शुरूआत नारियल से की जाती है।

नोट:- कोई भी फल एक ही ब्राह्मण को देना जरूरी नहीं है।

जैसे - आम, अमरुद, केला, सीताफल, संतरा, पानीफल, नारियल, सेब, चीकू, आलूबखारा, मौसमी, लीची आदि।

पेटिया-

३० किलो धान का एक पेटिया होता है। यह १३ जगह दिया जाता है। १३ नहीं तो ३ भी दे सकते हैं। १ व्यक्ति के हिसाब से एक महीने का ३० किलो समान देते हैं।

आटा, तेल, धी, चीनी, चावल, अरहर, चना दाल, पापड़ बड़ी, मोठ, चना, मुंग, मिर्च, धनिया, अमचूर, हल्दी, जीरा, राई, नमक, साथ में लकड़ी एवं जलावन का दाम एवं दक्षिणा आदि।

सौ सेरी देने की विधि-

खाने के समान धान, फल, मिठाई, नमकीन, मसाला कुछ भी साग-सब्जी एक-एक किलो सौ जगह देते हैं।

लोहा, पीतल, ताँम्बा यह भी एक-एक किलो देते हैं।

हवेजी में सोना, जवार में मोती एवं चावल में चाँदी देते हैं।

मिनख लुगाई का जोड़े से करते हैं तो दो किलो समान देते हैं।

नोट:- इन सारे समान की सूची एक कागज में लिख लेते हैं। उस लिखे कागज को चाँदी की नाव में रखकर धाटिया के द्वारा गंगा जी में विसर्जन करते हैं।

हजारी -

हजार तरह की वस्तु चाहे खाने की हो या और कोई भी दान करते हैं।
किस मास में क्या दान देना चाहिए -

लखेतरी -

लाख तरह की चीजें दान कर सके जिसे लखेतरी कहते हैं।

मास	दान
चैत्र मास	वस्त्र दान
वैशाख मास	मालपूवा
ज्येष्ठ मास	छत्ता
आषाढ़ मास	सेज
सावन मास	वस्त्र दान
कार्तिक मास	दीप दान
मिगसर मास	नमक दान
पोष मास	स्वर्ण दान
माघ मास	तिल दान
फालुन मास	अन्न दान

विशेष- कोई भी मास में शुक्ल पक्ष में फूल दान करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। कोई भी मास में कृष्ण पक्ष में जल दान देने से महाफल की प्राप्ति होती है।

सप्तधान में क्या रहता है-

१. गेहूँ, २. चावल, ३. जौ, ४. उड़द, ५. मूँग, ६. चना, ७. ज्वार, ये सभी सप्तधान हैं।

पंचरत्न में क्या रहता है -

१. मूँगा, २. मोती, ३. पन्ना, ४. सोना, ५. चाँदी, ये सभी पंचरत्न हैं।

अठारह धान में क्या रहता है -

१. गेहूँ, २. चावल, ३. जौ, ४. उड़द, ५. मूँग, ६. चना, ७. तुअर, ८. मोठ, ९. मटर, १०. मसूर, ११. बाजरा, १२. जवार, १३. मक्का, १४. चवला, १५. गवार, १६. दाल, १७. कुल्था, १८. तिल, ये सभी अठारह धान हैं।

अष्टधातु में क्या रहता है -

१. सोना, २. चाँदी, ३. पीतल, ४. लोहा, ५. ताम्बा, ६. काँसा, ७. शीशा, ८. जस्ता (रांगा) ये सभी अष्टधातु हैं।

तार की बत्ती के नियम

१. शिवजी की सवा लाख बत्ती तीन तार की श्रावण में
 २. पीपल की पांच तार की १०८ बत्ती ४० दिन जेठ में
 ३. दुर्गा जी की ९ तार की १०८ बत्ती ९ दिन नवरात्र में
 ४. लोद का महीना ३३ तार की ३३ बत्ती ३१ दिन
 ५. सूर्यनारायण की १३ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन तक
 ६. भागवत सप्ताह की ७ तार की १०८ बत्ती ७ दिन
 ७. गंगा माई की ७ तार की १०८ बत्ती ३३ दिन हरिद्वार में
 ८. हनुमान जी की ५ तार की सवा लाख बत्ती पूर्णिमा को
 ९. त्रिवेणी की ९ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन वैशाख में
 १०. तुलसी जी की ७ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन कार्तिक में
 ११. विष्णु जी की १६ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन भादौ में
 १२. पथवारी की ४ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन कार्तिक में
 १३. श्राद्ध की १६ तार की ११६ बत्ती १६ दिन श्राद्ध में
 १४. गणेश जी की ३ तार की १०८ बत्ती ३१ दिन भादौ में
 १५. ब्रह्मा जी की ५ तार की सवा लाख बत्ती ब्रह्मा जी के मंदिर में
- मंगसिर महीना

गृहस्थ-गीता

“अतिथ्य” ही घर का वैभव है ।
“प्रेम” ही घर की प्रतिष्ठा है ।
“व्यवस्था” ही घर की शोभा है ।
“समाधान” ही घर का सुख है ।
“सदाचार” ही घर का सुवास है ।
ऐसे घर में सदा प्रभु का वास है ।
ऋण हो, ऐसा खर्च मत करो ।
पाप हो, ऐसी कमाई मत करो ।
क्लेश हो, ऐसा मत बोलो ।
चिंता हो, ऐसा जीवन मत जीओ ।
रोग हो, ऐसा मत खाओ ।